International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 26-09-2025, Accepted: 26-10-2025, Published: 10-11-2025
Volume 7, Issue 6, 2025, Page No. 19-20

महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत की वर्तमान में प्रासंगिकता"

Tara Chand Meena
Village post-jastana tehsil-bonli district -sawai madhopur, Rajasthan, India

सारांश
महात्मा गांधी का अहिंसा सिद्धांत केवल राजनीतिक संघर्ष का साधन नहीं था, बल्कि यह एक सार्वभौमिक जीवन–दर्शन है जो मानवता, सत्य और करुणा पर आधारित है। वर्तमान समय में जब विश्व आतंकवाद, सामाजिक हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है, तब गांधीजी की अहिंसा की भावना पहले से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। अहिंसा आज केवल एक नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि शांति, संवाद और वैश्विक सह–अस्तित्व का प्रभावी माध्यम बन सकती है। आधुनिक समाज में व्यक्तिगत जीवन से लेकर अंतरराष्ट्रीय संबंधों तक, गांधीवादी अहिंसा के सिद्धांत मानवता के स्थायी विकास और नैतिक पुनर्जागरण का मार्ग प्रस्तुत करते हैं

मूल शब्द: महात्मा गांधी, अहिंसा, सत्य, शांति, करुणा, सामाजिक समरसता, वैश्विक शांति, नैतिकता, मानवीय मूल्य, आधुनिक समाज

परिचय

1. प्रस्तावना: गांधी और अहिंसा का दार्शनिक आधार

महात्मा गांधी का जीवन और चिंतन भारतीय संस्कृति, धर्म और नैतिक मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ था। उनके लिए अहिंसा केवल एक राजनैतिक उपकरण नहीं थी, बल्कि यह जीवन का एक सर्वव्यापी दर्शन था। गांधीजी ने कहा था, "अहिंसा मानवता का सर्वोच्च धर्म है।" उन्होंने अहिंसा को सत्य के साथ जोड़ा और इसे आत्मा की शक्ति माना। उनके अनुसार, सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं — जहाँ सत्य है वहाँ अहिंसा अनिवार्य है।

गांधीजी की अहिंसा की प्रेरणा उन्हें भगवद्गीता, उपनिषद, जैन और बौद्ध परंपरा से मिली। उन्होंने इसे केवल शारीरिक हिंसा के विरोध तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मानसिक, वाचिक और वैचारिक हिंसा का भी विरोध किया। उनके मत में, दूसरों के प्रति घृणा, क्रोध, लोभ और ईर्ष्या भी हिंसा के ही रूप हैं। अतः उन्होंने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में — राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था और नैतिकता कृ में अहिंसा को केंद्र में रखा।

अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित उनके सत्याग्रह आंदोलन ने न केवल भारत की स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी, बल्कि विश्वभर में सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत किया। गांधीजी के अनुसार, "अहिंसा कमजोरों का शस्त्र नहीं, बल्कि यह शक्तिशाली आत्मा का अस्त्र है।" यह विचार आज के समय में भी एक नैतिक दिशा–सूचक के रूप में मानवता को मार्गदर्शन देता है।

2. अहिंसा का सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव

गांधीजी ने अपने जीवन में अहिंसा को व्यवहारिक रूप दिया। उन्होंने इसे केवल व्यक्तिगत आदर्श नहीं रहने दिया, बल्कि इसे सामूहिक और राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित किया। असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में अहिंसा ही मुख्य हथियार रही। इन आंदोलनों ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया, और यह सिद्ध किया कि बिना हिंसा के भी अत्याचार और अन्याय का प्रतिरोध किया जा सकता है।

राजनीतिक दृष्टि से गांधीजी ने यह दिखाया कि हिंसा तात्कालिक परिणाम देती है, परंतु अहिंसा स्थायी परिवर्तन लाती है। जब हिंसा समाज को विभाजित करती है, तब अहिंसा समाज को जोड़ने का कार्य करती है। उन्होंने यह भी कहा कि "अहिंसा का मार्ग कठिन है, परंतु यही सच्चे मानव धर्म का मार्ग है।"

सामाजिक स्तर पर गांधीजी ने अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव, स्त्री असमानता और आर्थिक विषमता के खिलाफ अहिंसात्मक संघर्ष चलाया। उनके अनुसार, सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष भी प्रेम और सहानुभूति पर आधारित होना चाहिए। अहिंसा केवल युद्ध का विरोध नहीं, बल्कि यह मानव के भीतर विद्यमान करुणा, सहनशीलता और समानता की भावना को विकसित करने का प्रयास है।

राजनीति में भी अहिंसा का आदर्श आज अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक लोकतंत्र में संवाद, सह–अस्तित्व और सहिष्णुता की भावना वही है जो गांधीजी के अहिंसक विचारों में निहित थी। अहिंसा आज भी सामाजिक सौहार्द और न्यायपूर्ण शासन के लिए अनिवार्य तत्व है।

3. वर्तमान संदर्भ में गांधीजी की अहिंसा की प्रासंगिकता

वर्तमान युग में जब विश्व आतंकवाद, धार्मिक उग्रवाद, सामाजिक हिंसा, युद्ध और आर्थिक असमानता की आग में झुलस रहा है, तब गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। वैश्विक स्तर पर शक्ति, प्रतिस्पर्धा और हिंसा की प्रवृत्तियाँ मानवता के लिए गहरा संकट बन गई हैं। ऐसे समय में गांधीजी का विचार हमें यह सिखाता है कि किसी भी प्रकार की स्थायी शांति केवल हिंसा के त्याग से संभव है।

आज के समय में अहिंसा का अर्थ केवल युद्ध न करना नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के आचरण, विचार और व्यवहार में करुणा और संवेदनशीलता को अपनाना है। गांधीजी का संदेश था कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर से हिंसा, घृणा और लोभ को मिटा दे, तो समाज में स्थायी शांति स्थापित हो सकती है।

ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरणीय असंतुलन और प्राकृतिक संसाधनों के अति–शोषण के संदर्भ में भी गांधीजी की अहिंसा अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत प्रस्तुत किया था, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को संसाधनों का उपयोग केवल अपनी आवश्यकताओं तक सीमित रखना चाहिए, लालच के लिए नहीं। यह सिद्धांत आज की पर्यावरणीय और आर्थिक चुनौतियों के समाधान का एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

शिक्षा, मीडिया, राजनीति और सामाजिक संस्थानों में यदि गांधीवादी अहिंसा का भाव पुनर्स्थापित किया जाए, तो समाज में सहयोग, सह–अस्तित्व और नैतिकता की संस्कृति को पुनर्जीवित किया जा सकता है। अहिंसा आज भी वह नैतिक शक्ति है जो हिंसक प्रवृत्तियों पर अंकुश लगा सकती है और मानवीय संबंधों में विश्वास को पुनः स्थापित कर सकती है

4. निष्कर्ष: अहिंसाकृमानवता का शाश्वत मार्ग

गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत की मूल भावना मानवता, सत्य और करुणा पर आधारित है। उन्होंने जो संदेश दिया, वह केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह आज और भविष्य के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। विश्व के अनेक देशों में, जैसेकृअमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला, और म्यांमार में आंग सान सू कीकृने गांधीजी के अहिंसक सिद्धांतों को अपने संघर्ष का आधार बनाया। यह सिद्ध करता है कि अहिंसा एक सार्वभौमिक मूल्य है, जो किसी एक राष्ट्र या धर्म की संपत्ति नहीं है।

आज जब हिंसा केवल हथियारों तक सीमित नहीं, बल्कि विचारों और शब्दों में भी प्रवेश कर चुकी है, तब गांधीजी के अहिंसक आदर्श हमें आत्मावलोकन के लिए प्रेरित करते हैं। अहिंसा का मार्ग कठिन अवश्य है, परंतु यही मानव सभ्यता को विनाश से बचाने का एकमात्र उपाय है।

इसलिए, आधुनिक युग के राजनैतिक नेताओं, शिक्षकों, युवाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे गांधीजी के अहिंसा सिद्धांत को केवल एक ऐतिहासिक विचार न मानें, बल्कि इसे अपने व्यवहार और नीतियों का हिस्सा बनाएं।

गांधीजी की अहिंसा हमें सिखाती है कि सच्ची शक्ति शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक होती है। जब समाज इस शक्ति को पहचान लेता है, तब ही स्थायी शांति, न्याय और मानवता की स्थापना संभव होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी की अहिंसा केवल बीते युग का विचार नहीं, बल्कि भविष्य की सभ्यता का पथप्रदर्शक सिद्धांत है।

संदर्भ सूची

1. Fischer, Louis. The Life of Mahatma Gandhi. Harpercollins, 2006.
2. Parekh, Bhikhu. Gandhi's Political Philosophy**:** A Critical Examination. University of Notre Dame Press, 1989.
3. Dalton, Dennis. Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action. Columbia University Press, 1993.
4. Parel, Anthony J. Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony. Cambridge University Press, 2006.
5. Hardiman, David. Gandhi in His Time and Ours: The Global Legacy of His Ideas. Anthem Press, 2003.
6. Iyer, Raghavan. The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi. Oxford University Press, 1973.
7. Weber, Thomas. Gandhi as Disciple and Mentor. Cambridge University Press, 2004.
8. Bhattacharya, Sabyasachi. Gandhi and Contemporary Challenges. Indian Council of Social Science Research, 2010.
9. Desai A R. Social Background of indian nationalism. Popular Prakashan, 1948.
10. Brown, Judith M. Gandhi: Prisoner of Hope. Yale University Press, 1989.
11. Chandra, Bipan. India's Struggle for Independence. Penguin Books India, 1988.
12. शरण, शं. (2017). गांधी अहिंसा और राजनीति. अक्षय प्रकाशन.
13. कुमार, म., & विश्वास, अ. क. (2020). गांधी की अहिंसा दृष्टि. वाणी प्रकाशन.
14. सिंह, भ. (2023). गांधी और अहिंसक हिंसा. सस्ता साहित्य मण्डल.
15. रोलांद, र. (2021). शांति और अहिंसा के दूतरू महात्मा गांधी [Messenger of Peace and Non-Violence: Mahatma Gandhi]. शिलालेख पब्लिशर्स.